विषेष आवष्यकता वाले (विकलांग) बालकों के लिए समावेषी षिक्षा का विष्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ भूपेन्द्र कौर
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद उ0प्र0
भारत

लक्ष्मी मिश्रा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद उ0प्र0
भारत

सार संक्षेपः –

इतिहास में हमे विभिन्न विशिष्टाओं वाले व्यक्ति देखने को मिलते है। जैसे–महान कवि सूरदास जन्मान्धे थे। अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट स्वय पोलियो के शिकार थे। इस प्रकार के अनेक उदाहरण हमे देखने को मिलते है। इस प्रकार के लोगों को विशिष्टता की श्रेणी में रखा गया हैं। ऐसे बालकों को विशिष्ट प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता होती है। शिक्षा प्राप्त करना सबका जन्म सिद्ध अधिकार है। शिक्षा मनुष्य के समुचित विकास मे अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है। इसके द्वारा बालक की अर्न्तनिहित शक्तियों को बहार निकाला जाता है। विशिष्टता शारीरिक, मानसिक किसी भी प्रकार की हो सकती है। विशिष्ट बालक अपने आपको सामान्य बालकों से भिन्न रखते है। अतः इन बच्चों की देख भाल करना तथा इनकी शिक्षा का प्रवन्ध करना, शैक्षिक अवसरों की समानता, सामाजिक न्याय एवं राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके लिए विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता महसूस की गई, क्योंकि विशिष्ट बालक सामान्य बालकों से अलग होते है। लेकिन मनोवैज्ञानिको ने महसूस किया कि इससें बालको में हीन भावना का विकास हो रहा है। इसलिए विशिष्ट व सामान्य बच्चों के लिए एक अलग शिक्षा अर्थात समावेशी शिक्षा को अपनाया गया। यह शिक्षा सामान्य व विशिष्ट बच्चों को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करती है। समावेशी शिक्षा तो विशिष्ट शिक्षा का पूरक है। कम शारीरिक रूप से बाधित बालकों को समावेशी शिक्षा संस्थान में प्रवेश कराया जा सकता है।

मुख्य शब्दः – विशिष्ट बालक, समावेशी शिक्षा, अर्न्तनिहित शक्तियॉ

प्रस्तावनाः –

देश पर बोझ माने जाने वाले विकलांग व्यक्तियो को आज समाज मे शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर न समझकर उपयोगी व्यक्ति समझा जाने लगा है। प्राचीन सभ्यता पर नजर डाले तो पाते है कि या तो शारीरिक रूप से बाधित बालको की हत्या कर दी जाती थी या उन्हे समाज कलंक की नजरो से या दयालुता की नजर से देखता था उन्हे बोझ समझा जाता था। आज कोई ऐसा कार्य नही जहॉ किसी न किसी विकलांग विभूति ने अपने असाधारण कृतित्व मे अमिट छाप न छोडी हो। अमेरिकी राष्ट्पति रूजवेल्ट, पोलियोग्रस्त क्रिकेटर चन्द्रशेखर, श्रवणहीन वैज्ञानिक थॉमस एडीसन, अस्थि विकलांग स्टीफन हाकिन्स एवं नकली टॉगो के सहारे विमान चलाने वाले पायलट मरैस्येव आदि इसके उदाहरण है। बीजिंग ओलाम्पिक के पैरालंपिक गेम्स मे (विकलागो से सम्बन्धित) दर्शको की बढती संख्या से जाहिर होता है कि विश्व समुदाय की विकलांग के बारे मे धारणा बदली है। विकलांग बालक आवश्यकता की पूर्ति चाहता है तथा इन आवश्यकताओ की पूर्ति न होने पर उसमे निराशा, कुण्ठा व असन्तोष की भावना उत्पन्न हो जाती है। अतः ऐसे बालको को समाज मे उचित स्थान दिलाने के लिए,

समाज के अनुकूल बनाने के लिए विशेष प्रकार की सुविधाओ की आवश्यकता हांती है। विकलांग बच्चे शिक्षा मे सबसे समूहो मे से एक है। जहॉ तक हो सके प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत विशेषताओ की परवाह किये बिना प्रत्येक स्थानीय स्कूल मे सिखाने की व्यवस्था होनी चाहिए। ऐसे बच्चो को विकलांगता से 'अलग' और 'एकीकृत' दृष्टिकोण से बचाना चाहिए।

समावेषी षिक्षाः –

समावेशी शिक्षा वह शिक्षा होती है, जिसके द्वारा विशिष्ट क्षमता वाले बालक जैसे मन्द बुद्वि, अन्धे, बहरे बालक तथा प्रतिभाशली बालको को शिक्षा दी जाती है सामवेशी शिक्षा का अर्थ है कि सभी बच्चे चाहे वे किसी भी प्रकार के हो एक ही स्कूल मे एक साथ सीखते है। यह सभी शिक्षार्थियो तक पहुचने बाली शिक्षा की बाधाओ को दूर करने के लिए उपयोगी है, जो की सभी बच्चो की भगीदारी और उपलब्धि को सीमित करता है। यह सभी बच्चो और युवाओ की विविध आवश्यकताओ, क्षमताओ और विशेषताओ का सम्मान करती है, सभी प्रकार के भेद भावो से मुक्त है। समावेशी शिक्षा प्रणाली समाज को अधिक समावेशी बना सकती है। समावेशी शिक्षा सर्वप्रथम छात्रो के बौद्विक शैक्षिक स्तर की जॉच की जाती है, तत्पश्चात उन्हे दी जाने वाली शिक्षाका स्तर निर्धारित किया जाता है। अतः यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है, जो कि विशिष्ट क्षमता वाले बालको हेतु निर्धारित की जाती है। समावेशी शिक्षा को एक आधुनिक सोच की तरह परिभाषित किया जा सकता है, जो कि शिक्षा को अपने मे सिमटे हुए दृष्टिकोण से मुक्त करती है और उपर उठने के लिए प्रोत्साहित करती है। ''समावेशी शिक्षा अधिगम के ही नही, बल्कि विशिष्ट अधिगम के नये आयाम खोलती है।''

कुछ शिक्षाविद् विशिष्ट शिक्षा के पक्षधर नही है।उनके अनुसार यह शिक्षा के अवसरो के समान नही तथा बालको के विचारो मे भिन्नता पैदा होती है। सामान्य कक्षाऍ अपंग बालको मे हीन भावना उत्पन्न करती है। कुछ समय पहले, मनोवैज्ञानिको ने विचार दिया कि समावेशी शिक्षा हमारे सामान्य विधालयो मे दी जाये, जिससे सभी बालको को शिक्षा के समान अवसर मिलें। विकलांग बच्चे शिक्षा से सबसे बहिष्कृत समूहो मे से एक है। विश्व स्वास्थय संगठन के अनुसार दुनिया भर मे लगभग 150 मिलियन बच्चे विकलांग है। विकलांग बच्चो को उनकी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली मे कैसे शामिल किया जाए। उपयुक्त शिक्षण सामग्री की कमी के कारण स्कूल मे उनकी पहुॅच और सीखने मे मुश्किल हो जाती हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सभी बच्चो के लिए एक मौलिक अधिकार हैं। विकलांग बच्चो कोई आपदा नही है। यह विश्व शांति का निर्माण करने और सतत् विकास को बढावा देने का आधार भी है। सतत् विकास लक्ष्य किसी को पीछे छोडने पर अपना ध्यान केन्द्रित करने के साथ, अपनी शिक्षा प्रणालीयों को अधिक समावेशी और न्याय सगंत बनाने के लिए अवसर प्रदान करता है। समावेशी शिक्षा सभी विकलांग बच्चो को फलने–फूलने मे मदद करती है यह समाज मे एक महत्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका निभा सकते है। समावेशी शिक्षा विविधता और गुणवत्ता पर ध्यान केन्द्रित करने और बच्चो की विभिन्न आवश्यकताओं के प्रति इसकी जबाब देही के साथ सभी शिक्षार्थियों के लिए फायदे मंद है।

समावेषी षिक्षा की आवष्यकताः –

मानव योनी मे जन्म लेने के फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को प्रकृति द्वारा प्राप्त समस्त प्रकार की सुविधाओ का उपयोग करने का अधिकार है। अतः विशिष्ट बालक भी समाज का एक अभिन्न अंग होता है। उनके लिए समावेशी शिक्षा की आवश्यकता परमावश्यक हो जाती है। समावेशी शिक्षा से सम्बन्धित सुविधाये देकर विशिष्ट बालको को लाभ पहुचाया जा सकता है। यह आधुनिक समय मे शिक्षा के क्षेत्र मे मुख्य समस्या है कि सामान्य एवं विशेष बच्चो का शिक्षा मे समावेश कैसे किया जाए प्राचीन समय मे विशेष बालको (विकलांग बालको) को शिक्षा

एंव समाज दोनो से दूर रखा जाता था। ये बालक प्राचीन काल से सामाजिक भेदभाव सहते हुए आ रहे थे। समाज से इस रूढिवादी अवधारणा को दूर करने का एक मात्रा सहारा विशेष बालको को काबिल बनाना है जो समावेशी शिक्षा के माध्यम से सभंव है। हालांकि, लाभवंचित समूहो जैसे मुस्लिमो, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, बालिकाओ और विशेष आवश्यकता वाले बालको तथा सामान्य जनसंख्या के बीच नामांकन मे औसत कमी आई है ऐतिहासिक दृष्टि से लाभवंचित और आर्थिक रूप से कमजोर बच्चो के अधिगम स्तरो, जिनमे सीखने की क्षमता बहुत कम होती है, इसमे अभी बडा अंतराल है। व्यापक और बढते हुए अधिगम अंतराल ने नामांकन क्षेत्र मे प्राप्त समानता के लाभो को खतरा पहुचाया है क्योकि अधिगम के कम स्तरों वाले बच्चो के पढाई बीच मे छोडकर जाने की संभावना अधिक रहती है। हमे स्त्री पुरूष और सामाजिक अंतराल कम करने के मौजूदा हस्तक्षेपो की जॉच करने तथा प्रभावकारी समावेश के लिए केन्द्रित कार्य नीतियों को पहचानने की आवश्यकता है।

समावेषी षिक्षा का महत्वः –

समावेशी शिक्षा प्रत्येक बच्चे के लिए उच्च और उचित उम्मीदो के साथ उसकी व्यक्तिगत शक्तियो का विकास करती है। समावेशी शिक्षा अन्य छात्रों को अपनी उम्र के साथ कक्षा के जीवन मे भाग लेने और व्यक्तिगत लक्ष्यो पर काम करने हेतु अभिप्रेरित करती है। समावेशी शिक्षा बच्चो को उनके शिक्षा के क्षेत्र मे और स्थानीय स्कूलो की गतिविधियों मे उनके माता पिता के शामिल होने को भी प्रोत्साहित करती है। समावेशी शिक्षा सम्मान और अपनेपन की सास्कृति के साथ साथ व्यक्तिगत मतभेदो को दूर करने के भी अवसर प्रदान करती हैं। समावेशी शिक्षा मे अन्य बच्चे अपनी स्वयं की व्यक्तिगत आवश्यकताओ और क्षमताओ के साथ प्रत्येक को एक विविधता के साथ दोस्ती का विकास करने की क्षमता विकसित करती है।

समावेषी षिक्षा के अर्न्तगत विषेष आवष्यकता वाले बालक और उनकी की षिक्षाः –

अक्षमता के प्रकार एवं उनकी षिक्षा–

(1) दृष्टि अक्षमताः – नेत्रहीन बालको को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने के लिए उचित शिक्षण प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। इन बालको की शिक्षा का मुख्य उददेश्य यह होना चाहिए कि वे समाज मे समायोजन स्थापित कर सकें। दृष्टि अक्षमता को 1961 मे अमेरिकन फाउडेशन ने निम्न प्रकार परिभाषित किया है–ऐसे बच्चे जिनकी दृष्टि क्षमता 20/200 स्नेल हो, नेत्रहीन समझे जाते है, ऐसे बच्चे जिनकी दृष्टि क्षमता 20/70 स्नेल तथा 20/200 स्नेल से कम हो (बीच मे हो) इन्हे कम दिखयी देता हो उनको कक्षा मे आगे की लाइन मे बिठाया जाना चाहिए। कक्षा मे उचित रोशनी का प्रबंध हो, आंशिक दृष्टि वाल बच्चो के लिए मोटे अक्षर वाली पुस्तकें होनी चाहिए। बच्चो को पढने के लिए जैसे आप्टाकोन, कुर्जवेल अध्ययन मशीन, लधुबेल रिकार्डर आदि उपकरण दिया जा सकता है, ब्रैल लिपि का प्रयोग करके भी उन्हे शिक्षा दी जा सकती है।

(2) श्रवण अक्षमताः – श्रवण शक्ति मौखिक संदेशवाहकता अधिगम मानसिक विकास और भाषा विकास का सबसे सशक्त साधन है। बालक अपने आस पास के वातावरण का ज्ञान श्रवण शक्ति के द्वारा ही प्राप्त करता है। कान मे दोष होने पर बालक की शाब्दिक अभिव्यक्ति का विकास ठीक प्रकार से नही होता। श्रवण अक्षमता दो प्रकार की होती है–एक पूर्णता बधिर, ऐसे बच्चो का क्षय 90 या इससे अधिक डेसिबल का स्तर होता है। ये बच्चे श्रवण यंत्र के बिना और कभी कभी यंत्र लगाकर भी कुछ नही सुन पाते है। दूसरा अलप श्रवण वाले बच्चे ऐसे बच्चो को यंत्र के द्वारा सुनने की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सकता है। इन्हे पढाने के लिए चिन्ह भाषा का उपयोग करना चाहिए, कक्षा मे आगे की लाइन मे बैठाना चाहिए, धीरे धीरे बोलना चाहिए ताकि बच्चे होठ को देख कर समझ

सके। ऐसे बच्चो को शरीर से विभिन्न गतिविधियॉ करवाकर इनके सम्प्रेषण को सुधरा जा सकता है, ओडियो विसुअल सामग्री का प्रयोग करके शिक्षा दी जा सकती है।

(3) मानसिक मंदताः – मनुष्य मे एक विशिष्ट विशेषता है वो है उसकी बौद्विक शक्तियां जब यह बौद्विक क्षमता सामान्य से कम होती है तो इस स्थिति को मानसिक मंदता कहा जाता है बुद्वि को मापने का पैमाना बुद्विलब्धि है बुद्विलब्धि के विभिन्न स्तर होते है। अति गंभीर रूप से मानसिक मंद बच्चे को दैनिक क्रिया कलाप सिखाये जाते है जैसे कंधी करना, ब्रश करना, कपडे पहनना आदि इसी प्रकार इन्हे सामाजिक कौशल जैसे हाथ मिलाना, हालचाल पूछना, त्योहारो से सम्बन्धित कार्य करने के लिए प्रेरित करना आदि। उसी प्रकार इन्हे अवकाश के समय के कौशल जैसे गेम्स खेलना, संगीत सुनना पढना, टी वी देखना आदि सिखाये जाते है उसी प्रकार गणित कौशल भी सिखया जाता हैजैसे खेल खेल मे गिनती सिखाना, पहाडे सिखना, जोड घटा, आयतन भार आादि सिखना और इनका ज्ञान कराना। ऐसे बच्चो को पढाने की विधि सामान्य बच्चो की अपेक्षा भिन्न होती है।

(4) गामक अक्षमताः– गामक अक्षमता मे जो शारीरिक क्षति होती है वह प्रायः कंकाल तंत्र से सम्बन्धित होती है गामक अक्षमता स्नायुतात्रिक क्षतिमासपेशीय एंव हडडी से सम्बधित क्षतिजन्मजात विकृति–सामान्य कमी, मादक पदार्थ, विष का प्रभाव, दवा आदि के कारण उत्पन्न होती है। ऐसे बच्चो को नियमित कक्षाओ मे सामान्य अध्ययन कराना चाहिए। विभिन्न सहायक सामग्री इन बच्चो के लिए काफी सहायक होती है। शिक्षक को इनके सामाजिक संवेगात्मक और इनके शारीरिक विकास का भी ध्यान रखना चाहिए। इन बच्चो को सामाजिक कौशल भी सिखये जाने चाहिए।

(5) अधिगम अक्षमताः–अधिगम अक्षमता वाले बच्चो मे यद्यपि बौद्विक क्षमता पर्याप्त होती है फिर भी वे कौशलो मे पिछडे रहते है। इनके शैक्षिक विकास के लिए पढना लिखना, स्पष्ट उच्चारण और गणितीय कौशल आवश्यक है। इनकी मस्तिष्कीय क्षमता और वास्तविक निष्पादन मे बहुत अन्तर दिखलाई पडता है। अधिगम अक्षमता के कारणो की स्पष्ट पहचान नही हो पायी है लेकिन निश्चित रूप से इसमे मस्तिष्क प्रभावित होता है। जो किसी एक कारण या अनेक कारणो से भी हो सकता हैजिनमे से कुछ कारण जन्म से पूर्व और जन्म से बाद के भी सकते है

अधिगम अक्षमता के कारण–

डिसलेक्सिया–इसमे बच्चे पहली दूसरी कक्षा मे ही पढने लिखने जैसे साधरण कौशल को भी प्राप्त करने मे कठिनाई महसूस करते है इस अक्षमता से ग्रसित बच्चे पढ नही पाते। डिसग्राफिया–इस प्रकार के बच्चे मौखिक जववा तो ठीक देते है लेकिन उसे लिख नही पाते कुछ अक्षरो को लिखने मे ज्यादातर गलती करते है जैसे 6 की जगह 9 लिख देना। डिस्केलकुलिया–अधिकाशं इस अधिगम अक्षमता वाले बच्चे गणितीय चिन्हो को ठीक प्रकार से नही पहचान पाते आठ दस वर्ष के बच्चे भी साधरण चिन्हो को पहचानने मे असमर्थ होते है सही क्रम नही लगा पाते और साधरण सूत्र का ज्ञान भी नही कर पाते। ऐसे बच्चो की शिक्षा के लिए संसाधन युक्त कक्षा का प्रवन्ध करना चाहिए जिसमे इन बच्चो की शिक्षा से सम्बन्धित उपकरण हो। उन्हे समय समय पर परामर्श दाता की भी आवश्यकता होती है जो उन्हे उनके अनुसार सिखा सके।

निष्कर्षः–

आज के युग मे ''शिक्षा सभी के लिए'' का नारा अत्यधिक प्रचलित है। चूॅकि भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है, अतः यहॉ प्रत्येक जाति, धर्म तथा रंग–रूप के व्यक्ति रहते है। जिस प्रकार यह शारीरिक रूप से एक दूसरे से भिन्न है ठीक उसी प्रकार से यह आपस मे मानसिक रूप से भिन्न है। इसलिए इन बालको की शिक्षा हेतु

समावेशी शिक्षा का प्रावधान रखा गया। इस प्रकार कुल मिलाकर यह समावेशी शिक्षा समाज के सभी बच्चो को शिक्षा की मुख्य धरा के साथ जोडने की बात का समर्थन करती है यही सही मायने मे सर्व शिक्षा जैसे शब्दो का ही रूपान्तरित रूप है। जिसके कई उददेश्यो मे से एक उददेश्य यह भी है कि विशेष आवश्यकताओ वाले बच्चो को भी शिक्षा का अधिकार है, लेकिन दुर्भाग्यवश हम सब इसके अर्थ को पूर्ण तरीके से न समझते हुए इसके अर्थ को सिर्फ विशेष आवश्यकता वाले बालको की शिक्षा से ही लगा लेते है जो की सर्वथा ही अनुचित है। विशिष्ट बालको का क्षेत्र व्यापक होने के कारण विशिष्ट शिक्षा का क्षेत्र भी व्यापक है। भिन्न भिन्न प्रकार के विशिष्ट बालको के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था करनी पडनी। क्योकि समावेशी शिक्षा विशेष आवश्यकता वाले बालको की शिक्षा हो सकती है किन्तु इसका सम्पूर्ण उददेश्य सभी का विकास करना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. 'आर्य' डॉ0 मोहन लाल, 'पाण्डे' डॉ0 महेन्द्र प्रसाद, कौर भूपेन्द्र एवं गोला राजकुमारी, (2017): ''सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र'', मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
2. 'आर्य' डॉ0 मोहन लाल, (2017): ''शिक्षा के ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिप्रेक्ष्य'', मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
3. 'आर्य' डॉ0 मोहन लाल, (2017): ''ज्ञान और पाठ्यक्रम'', मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
4. 'आर्य' डॉ0 मोहन लाल, (2016): ''शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध'', मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
5. 'आर्य' डॉ0 मोहन लाल, (2014): ''शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन'', मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
6. 'आर्य' डॉ0 मोहन लाल, (2017): ''अधिगम के लिए आंकलन'', मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
7. 'आर्य' डॉ0 मोहन लाल, (2017): ''अधिगम और शिक्षण'', मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
8. शर्मा, डॉ0 आर0 ए0, (2008): ''शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्ध'', मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
9. ठाकुर, यतीन्द्र (2009): समावेशी शिक्षा; आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
10. मंगल, एस. के. एंव मंगल, एस. (2008): विद्यार्थी विकास और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया; मेरठः इझटरनेशनल पब्लिकेशन्स।
11. मंगल, एस. के. एंव पाठक, पी.डी. (2010): अधिगमकर्ता का विकास और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया; आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
12. सिंह, गया (2012): अधिगमकर्ता का विकास और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया; मेरठः आर0 लाल पब्लिकेशन्स।
13. गुप्ता, एस. पी. (2019): उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान; इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।